# पाठ - 23

# कर्तव्य पालन

■ डॉ. छाया पाठक

आइए सीखें . ■ सुख–दुःख एवं लाभ–हानि में एक समान रहना। ■ हर परिस्थिति में अपने कर्तव्य का पालन करना। ■ विलोम शब्द ■ योजक चिह्न ■ 'ही' निपात का प्रयोग ■ प्रत्यय■ तत्सम एवं तद्भव शब्द।

कक्षा का दृश्य

(मध्यावकाश के बाद विद्यार्थी कक्ष में आते हैं। कोई बच्चा अभी भी खेल में खोया हुआ है तो कोई शरारत करने में। यह उनका हिन्दी का काल खण्ड है। कुछ विद्यार्थियों ने अपनी पाठ्यपुस्तकें निकाली हैं। कुछ बच्चे आपस में बात–चीत कर रहे हैं। इसी बीच गुरुजी कक्षा में प्रवेश करते हैं।)

## प्रथम दृश्य

छात्रा : (एक साथ अभिवादन करते हुए) गुरुजी, नमस्ते।

गुरुजी : (अभिवादन स्वीकार करते हुए) शुभाशीष! अच्छा बच्चो बताओ, हमने कल क्या पढ़ा था ?

वैदेही : गुरुजी! कल आपने हमें सत्यवादी हरिश्चन्द्र और पितृ भक्त श्रवणकुमार की कथा सुनाई थी।

गुरुजी : अशोक! तुम बताओ, श्रवणकुमार अपने माता–पिता को कहाँ ले जा रहे थे ?

अशोक : तीर्थाटन के लिए।

गुरुजी : श्यामा! तुम बताओ, राजा हरिश्चन्द्र के सत्य की रक्षा करने में उनका साथ किसने दिया था?

श्यामा : उनकी पत्नी ने।

गुरुजी : शाबास। बिल्कुल ठीक बताया तुमने।

---

**शिक्षण संकेत** - ■ श्रीमद्भगवद्गीता के बारे में बताएँ। महाभारत की कथा संक्षिप्त में बताएँ। एकांकी में आए तत्सम शब्दों को वाक्य प्रयोग द्वारा समझाएँ। गीता के ज्ञान को जीवन में उतारने के लिए छात्रों को प्रेरित करें। संवाद सहित अभिनय करवाएँ।

(इसी बीच गुरुजी श्यामपट पर एक कलैंडर टाँग देते हैं। जिसमें युद्ध के मैदान में श्रीकृष्ण अर्जुन को गीता का उपदेश दे रहे हैं। चित्रा की ओर संकेत करते हुए गुरुजी कहते हैं।)

गुरुजी : अशोक! बताओ इस चित्रा में तुम्हें कौन दिखाई दे रहा है और ये क्या कर रहे हैं?

अशोक : इसमें कृष्ण और अर्जुन के बीच बातचीत चल रही है।

गुरुजी : बिल्कुल ठीक! लेकिन क्या तुम लोग जानते हो कि उनके बीच ये वार्तालाप युद्ध के मैदान में हुआ था?

श्यामा : (आश्चर्य से) हाँ, पर गुरुजी! युद्ध के मैदान में तो युद्ध होता है फिर ये बातचीत .....

गुरुजी : बिल्कुल ठीक सोचा तुमने! अर्जुन जब युद्ध के मैदान में युद्ध करने से पीछे हट रहा था तब श्रीकृष्ण ने उन्हें अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहने के लिए उपदेश दिया था।

रोहित : लेकिन अर्जुन युद्ध क्यों नहीं करना चाहते थे ?क्या वे डर गए थे या उन्हें लड़ाई करना अच्छा नहीं लगता था ?

गुरुजी : (मुस्कराते हुए) लगता है तुम लोगों के मन में अर्जुन को लेकर अनेक जिज्ञासाएँ हो रही हैं।

सभी छात्रा : (सहमति से) हाँ – हाँ गुरुजी! हमें कुछ समझ नहीं आ रहा है। आप हमें विस्तार से समझाइए न।

गुरुजी : चलो ठीक है। आज हम 'श्रीमद्भग्वद्गीता' के एक अंश का तुम लोगों से अभिनय करवाते हैं। क्या तुम लोग कृष्ण–अर्जुन से सम्बन्धित एक नाटक खेलोगे ?

छात्रा : (उत्साहित होकर एक साथ) हाँ – हाँ गुरुजी! हम ये नाटक खेलने के लिए तैयार हैं।

गुरुजी : ठीक है। इसके लिए सबसे पहले हम पात्राों का चयन करते हैं। तुममें से कृष्ण कौन बनेगा?

कई छात्रा : (एक साथ) मैं बनूँगा गुरुजी! मैं बनूँगा गुरुजी।

ठीक है, ठीक है। मैं देखता हूँ तुममें से कौन किसका अभिनय कर सकता है। पहले सभी बच्चे शांति से बैठ जाएँ। (छात्रों को गौर से देखते हुए) सात्विक कृष्ण का, सिद्धार्थ अर्जुन का और अशोक सूत्राधार का अभिनय करेगा। शेष छात्रा कौरव और पाण्डव की सेना के सैनिक बनेंगे।

## द्वितीय दृश्य

(कक्षा की मेज–कुर्सी एक ओर लगाकर रिक्त स्थान को मंच का आकार दे दिया जाता है। मंच के एक ओर कौरव सेनाएँ तथा दूसरी ओर पाण्डव सेनाएँ खड़ी हैं। तभी मंच पर सूत्राधार का प्रवेश होता है।)

सूत्राधार : मैं हूँ सूत्राधार। आज मैं धर्म–अधर्म, निश्चय–अनिश्चय, सुख–दुख, कर्म–अकर्म आदि की ओर संकेत करने वाले एक ऐसे प्रसंग से आपका साक्षात्कार कराने जा रहा हूँ जिसने 'श्रीमद्भगवद्गीता' को जन्म दिया। कुरूक्षेत्रा के मैदान में कौरव और पाण्डव की सेनाएँ युद्ध के लिए आमने–सामने खड़ी हैं। युद्धारंभ के लिए शंखनाद हो चुका है।

(एक ओर से सूत्राधार का प्रस्थान । दूसरी ओर से कृष्ण–अर्जुन का प्रवेश।)

अर्जुन : हे केशव! मेरे रथ को दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा कर दीजिए। जिससे मैं युद्ध के लिए आतुर इन योद्धाओं को अच्छी तरह से देख सकूँ।

कृष्ण : (रथ को लाकर दोनों सेनाओं के मध्य में खड़ा कर देते हैं।) हे पार्थ! युद्ध के लिए तत्पर कुरू योद्धाओं को देखो।

(अर्जुन दोनों सेनाओं की ओर दृष्टि डालते हैं और वहाँ अपने ताऊ, दादा, मामा, भाई, पुत्रा, पौत्रा, मित्रा, गुरु तथा सुहृदयों आदि को देखकर अत्यन्त करूणा से भर उठते हैं।)

अर्जुन : (विषादपूर्ण स्वर में) हे कृष्ण! अपने इन प्रियजनों को देखकर तो मेरा मुख सूखा जा रहा है। मेरे शरीर में कंप और रोमांच हो रहा है। हाथ से गाण्डीव धनुष गिर रहा है। मेरा मन भी भ्रमित सा हो रहा है। मुझमें यहाँ खड़े रहने का भी सामर्थ्य नहीं है। इसलिए मैं युद्ध नहीं करना चाहता।

कृष्ण : अर्जुन! तुझे यह असमय मोह क्यों उत्पन्न हो रहा है?तेरा यह आचरण किसी श्रेष्ठ पुरुष का आचरण नहीं है और न ही तेरी कीर्ति को बढ़ाने वाला है।

अर्जुन : लेकिन केशव! अपने ही बंधु–बांधवों से युद्ध कर न तो मैं विजय चाहता हूँ, न राज्य और न ही सुख।

कृष्ण : (हँसते हुए) हे कुंतीपुत्रा! इस संसार में जनमें प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु निश्चित है तथा मृत्यु के बाद पुनः नया जन्म भी निश्चित है। इसलिए इस विषय में तू व्यर्थ ही शोक कर रहा है।

अर्जुन : (करूण भाव से) हे माधव! तीनों लोकों का राज्य मिले तो भी मैं इनको खोना नहीं चाहता। फिर पृथ्वी के लिए तो मैं यह पाप कभी नहीं करूँगा।

कृष्ण : तू इस पाप–पुण्य के संशय में क्यों भ्रमित हो रहा है?यदि तू युद्ध में मारा भी गया तो स्वर्ग को प्राप्त होगा और यदि विजयी हुआ तो पृथ्वी का राज्य भोगेगा। तू युद्ध करने के लिए दृढ़ निश्चयी हो जा।

अर्जुन : मैं रणभूमि में किस प्रकार भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य के विरूद्ध लडूँगा ?ये दोनों ही मेरे पूजनीय हैं। अपने ही गुरुजनों और बंधु–बांधवों का वधकर मेरा किसी भी प्रकार कल्याण नहीं होगा। हम कैसे सुखी रहेंगे ?

कृष्ण : हे पार्थ! यह सब मत सोच। जय–पराजय, लाभ–हानि और सुख–दुख को समान समझकर तू

केवल युद्ध कर।

अर्जुन : (चिंतित मुद्रा में) लेकिन केशव! युद्ध में अपने ही स्वजनों का वधकर मुझे क्या फल मिलेगा?

कृष्ण : हे अर्जुन। तुझे केवल कर्म करने का अधिकार है उसके फल का नहीं –

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।''

इसलिए मोह–माया को त्यागकर तू केवल अपने कर्म को कर, फल की इच्छा त्याग दे।

अर्जुन : (चिंतामुक्त होकर) हे कृष्ण! आज आपने मेरे मन से अज्ञानरूपी अंधकार का नाशकर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाया है। आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है। अब मैं बिना किसी संशय के अपने कर्तव्य का पालन करूँगा।

(सभी बच्चे एवं गुरुजी प्रसन्नता से उठकर तालियाँ बजाते हैं।)

गुरुजी : अच्छा बच्चो! बताओ हमने इस नाटक के माध्यम से आज क्या–क्या सीखा ?

रोहिणी : सुख–दुख एवं हानि–लाभ में एक समान रहना।

अशोक : पाप–पुण्य के भ्रम में न पड़ना।

गुरुजी : हाँ बच्चो! सुख–दुःख एवं हानि–लाभ को हमें एक समान इसलिए समझना चाहिए क्योंकि सुख और दुःख दोनों ही हमें बंधन में डालते हैं।

रोहिणी : बंधन में कैसे गुरुजी?

गुरुजी : क्योंकि जब हमें सुख मिलता है तो हम इस चिंता में पड़ जाते हैं कि कहीं यह सुख हमसे छिन न जाए और जब हम दुःख में नहीं भी होते तब भी इस चिंता में रहते हैं कि कहीं दुःख न आ जाए। यही तो वह बंधन है जिससे हम मुक्त नहीं हो पाते।

नकुल : गुरुजी! हमें पाप–पुण्य के भ्रम में क्यों नहीं पड़ना चाहिए?

गुरुजी : एकदम सही प्रश्न किया तुमने! मान लो कि किसी कमरे में बहुत लंबे समय से घना अँधेरा है किन्तु जैसे ही उसमें प्रकाश किया जाता है अँधेरा अपने आप दूर हो जाता है। उसी प्रकार अतीत में किये गए पापों का अँधेरा पुण्य के एक ही कार्य से दूर हो जाता है।

सिद्धार्थ : (जिज्ञासा से) गुरुजी! मेरे मन में एक दुविधा चल रही है।

गुरुजी : कौन सी?

सिद्धार्थ : कृष्ण ने अर्जुन से ऐसा क्यों कहा कि तू केवल अपने कर्तव्य को कर फल की इच्छा त्याग दे। गुरुजी! जब फल की इच्छा ही नहीं होगी तो हम कर्म क्यों करेंगे?

गुरुजी : मैं समझाता हूँ। देखो बच्चो! हम लोग जो मेवे, फल इत्यादि खाते हैं क्या उनके वृक्ष हमने लगाए थे ?

छात्रा : नहीं।

गुरुजी : अब ये बताओ, यदि इन वृक्षों को लगानेवाला व्यक्ति ये सोचता कि इनके फल मुझे खाने को मिलेंगे तभी मैं इन्हें लगाऊँगा। तब तो कोई भी व्यक्ति न तो वृक्ष लगाता और न ही हमें उसके फल खाने को मिलते। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपना कर्म करना चाहिए। है ना ?

छात्रा : (एक साथ) ठीक है गुरुजी! आज आपने हमें बहुत ही अच्छी बातें बताईं। हम ये बातें अपने जीवन में अवश्य ध्यान में रखेंगे।

(तभी अगले कालखण्ड की घण्टी बजती है। सभी छात्र पुनः अपने–अपने स्थान पर चले जाते हैं।)

शब्दार्थ

## निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

| | | | |
|---|---|---|---|
| आतुर – | तीर्थाटन– | सामर्थ्य– | जिज्ञासा – |
| आचरण– | संशय– | उत्सर्ग– | दुविधा– |

## अभ्यास

### बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश कब दिया था ?

ख. अर्जुन करूणा से क्यों भर उठते हैं ?

ग. अपने स्वजनों को युद्ध भूमि में देखकर अर्जुन की क्या दशा हुई ?

घ. अर्जुन युद्ध क्यों नहीं करना चाहता था ?

ङ हम सुख–दुःख के बंधन से मुक्त कैसे हो सकते हैं ?

च पाप–पुण्य के भ्रम से निकलने के लिए गुरुजी ने क्या उपाय बताया ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए

(क़) ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''।

(ख) सुख और दुःख दोनों ही हमें बंधन में डालते हैं।

3- रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

क. युद्ध में तू प्राणों का उत्सर्ग कर ..... को प्राप्त होगा।

ख. तेरा यह आचरण किसी ..... पुरुष का आचरण नहीं है।

ग. आपने मेरे मन से अज्ञानरूपी अंधकार का नाश कर ज्ञान रूपी ..... फैलाया है।

### भाषा अध्ययन

1. शुद्ध वर्तनी छाँटिए –

| | | |
|---|---|---|
| कुरूक्षेत्र | कुरुक्षेत्रा | कुरुछेत्रा |
| पश्चात | पशचात | पश्चिात |
| निशचित | निश्चित | निश्चित |
| सामर्थ | सामर्थ्य | सामरथ्य |

2. दी गई वर्ग पहेली में से नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द छाँटिए –

अंधकार, कर्म, अनिश्चय, लाभ, बंधन, ज्ञान, पुण्य

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| र | ल | व | मु | क्त |
| अ | क | र्म | ग | ल |
| ज्ञा | य | प्र | हा | नि |
| न | पा | का | क | श्च |
| ह | प | श | स | य |

3. 'एकांकी' में आए योजक चिह्न वाले शब्द छाँटकर लिखिए।
4. दिए गए सामासिक पदों का विग्रह कीजिए –

पितृभक्त, सूत्राधार, सत्यवादी, युद्धारंभ, भग्वद्गीता

5. दिए गए शब्दों में से तत्सम एवं तद्भव शब्द छाँटकर अलग कीजिए –

6. 'ही' निपात के प्रयोग वाले वाक्य एकांकी से छाँटकर लिखिए।

7. 'ईय' प्रत्यय लगाकर शब्द बना है 'पूजनीय' इसी प्रकार के पाँच अन्य शब्द लिखिए।

योग्यता विस्तार–

1. श्रीमदभग्वद्गीता के इस अंश का शाला के वार्षिकोत्सव में वेशभूषा सहित अभिनय कीजिए।
2. 'कर्तव्य पालन' से संबंधित महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग कक्षा में सुनाइए।
3. कर्मण्येवाधिकारस्ते ..... जैसे अन्य शिक्षाप्रद श्लोक लिखकर कक्षा में टाँगिए।
4. श्रीमदभग्वद्गीता के अन्य अध्यायों की विषयवस्तु पर कक्षा में शिक्षक से चर्चा कीजिए।

जो मनुष्य सब कामनाओं का त्याग कर अहंकार रहित जीवन जीता है वही श्रेष्ठ है।